

## पद २६

(राग: यमन जिल्हा - ताल: केहरवा)

स्मरुनि तत्त्व हैं स्वरूप पाहे। जग नोहे ब्रह्मचि आहे आहे ॥ध्रु. ॥  
मीपण बंध हे मिथ्या वाहे। जग नोहे वस्तुचि आहे आहे। त्वंपद  
साक्षी तत्पद लक्ष्मी। असिपद हैं स्वरूपीं किमपि न साहे।  
श्रीगुरुमाणिक जय गुरु माणिक। म्हणुनी हैं अखंड प्रेमें बाहे ॥१॥